राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

जनने मरणं नूनं, प्राकृतं कर्म वर्त्तते।
जातो यो न परं मृत्वा, तस्यैव जननं वरम् ॥१६८॥

जनन-मरण तो निश्चित रूप से प्राकृतिक कर्म हैं। परन्तु जो मर करके पैदा नहीं हुआ उसी का जन्म श्रेष्ठ है।

Birth and death are natural, but the birth of that one who is not born again is the highest. |

जनयेद् विनयं या न, दारिद्र्यं या न नाशयेत्।
धन-कलापहारिण्यास्,-तच्छिक्षायाः फलं किमु ? ॥१६९॥

जो विनय उत्पन्न नहीं करे और दरिद्रता भी नष्ट नहीं करे, धन और समय को बर्बाद करने वाली उस शिक्षा का क्या फल है ?

What's the point of such education that neither creates humility nor destroys poverty but destroys time and money?

जना विवेकिनो यत्र, स्वदायित्व - प्रबोधिनः।
तत्रैव जनतन्त्रं स्यात्, सर्वेषां सुखशान्ति - कृत् ॥१७०॥

जहाँ लोग विवेकवान् और अपने दायित्व को समझने वाले होते हैं, वहीं जनतन्त्र सबको सुख शान्ति कारक होता है।

There democracy brings happiness and peace where people are prudent and understand their duty.

जनोपयोगि – कार्याणि, सर्वकारः करोति यः ।
स एव लभते दीर्घम्, आयुः कीर्त्तिं श्रियं च हि ॥१७१॥

जो सरकार जनोपयोगी कार्य किया करती है, वह ही दीर्घ आयु, कीर्त्ति और श्री प्राप्त करती है ।

The government that does the useful work for people has a long life and achieves fame and wealth.

जन्मतो मृत्युपर्यन्तं, मृत्तिका सह तिष्ठति ।
मृत्तिकातः समुत्पन्नस्, – तस्यामेव विलीयते ॥१७२॥

जन्म से मृत्यु तक प्राणी मिट्टी के साथ रहता है। मिट्टी से पैदा हुआ वह उस मिट्टी में ही विलीन हो जाता है ।

From the birth to the death living beings are living with the earth/dirt. Form earth/dirt they are born and, in the earth/dust/dirt they merge.

जानन्नापि पतेत् कश्चित्, कूपे वाष्यां च मूढधीः।
तत्फलं तेन भोक्तव्यम्, ईश्वरोऽत्र करोतु किम् ? ॥१७३॥

कोई मूर्ख जगता हुआ भी कूवे और बावड़ी में गिरता है तो उसका फल उसे भोगना ही चाहिये । इसमें ईश्वर क्या करे ?

If the stupid person even while awake falls into the well and step-well, he should bear the consequences of it. What God has to do with it?

जायते म्रियते को न, जगत्यस्मिन् विनश्वरे ? ।
किन्तु जातः स एवास्ति, कीर्त्या योऽन्तेऽपि जीवति ॥१७४॥

इस विनश्वर जगत् में कौन नहीं जन्म लेता और कौन नहीं मरता है ? किन्तु जन्म लेने वाला तो वही व्यक्ति है जो देहान्त हो जाने पर भी अपनी कीर्ति के साथ जीवित रहता है ।

Who is not born and who does not die in this mortal world? But,through the fame, the person who is born will live even after the death.